

दर्शनशास्त्र का इतिहास

32 डेसकार्टेस के ध्यान 1

व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

ठीक है, तो आज हम अपने दोस्त रेने डेसकार्टेस पर वापस आते हैं। और हम उनके मेडिटेशन में सोच की लाइन को ट्रेस कर रहे हैं, जहाँ उनके छह मेडिटेशन हैं। पहले वाले का थीम बस यह है, मुझे शक है, कि वह उन तरह की प्रॉब्लम को पहचान रहे हैं जिन्होंने उस समय के, साथ ही पिछली सदियों के स्केप्टिसिज़्म को जन्म दिया है।

पक्का यकीन न होना। और इसी वजह से वह, ध्यान दो में, यह नतीजा निकालता है, मुझे शक है, इसलिए मेरा वजूद है। और मैं एक सोचने वाली, शक करने वाली चीज़ के तौर पर वजूद में हूँ।

इससे, तीसरे ध्यान में, यह और भी पक्का हो जाएगा कि भगवान हैं। चौथे ध्यान में, हम तर्क के भरोसे और गलती की समस्या के बारे में बात करते हैं। इंसानी तर्क भरोसे लायक इसलिए बनता है क्योंकि यह भगवान की बनाई काबिलियत का इस्तेमाल है।

भगवान धोखा नहीं देते। लेकिन इससे हमारे सामने यह समस्या आती है कि आप गलती का हिसाब कैसे रखते हैं। यह अच्छाई के मुकाबले बुराई की समस्या जैसा है।

ठीक है। फिर, मेडिटेशन पाँच में, वह भगवान के होने के बारे में और बात करते हैं, लेकिन उनकी पूरी चिंता चीज़ों, शरीरों के बारे में ज़रूरी सच से है। और फिर, मेडिटेशन छह में, चीज़ों के होने के बारे में कुछ ज़रूरी सच।

तो यह है असल बात। और जैसा कि आप उम्मीद करेंगे, पिछली बार हम जो कह रहे थे, उसके हिसाब से सोच में एक कंटीन्यूटी है, कि उनका तरीका एक डिडक्टिव सिस्टम का है। तो वह जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह है शुरुआती एक्सिओम्स बनाना, और फिर, प्रूफ़्स की एक सीरीज़ के ज़रिए, एक के बाद एक नतीजा निकालना।

तो आपके पास सोचने-समझने की एक लंबी चेन है जो पूरे मेडिटेशन में एक सीधी लाइन में चलती है। यह अलग-अलग टॉपिक की कोई सीरीज़ नहीं है। यह सोचने का एक लॉजिकली निकाला गया सिस्टम है।

ठीक है। अब, पिछली बार, बेशक, हम इस बारे में बात कर रहे थे कि उन्होंने पहले मेडिटेशन में क्या किया। और आज हमारी चिंता, शुरू में, मेडिटेशन दो से है, फिर तीन से, शायद चार से।

और यह मेडिटेशन टू में है कि वह, जैसा कि आप देख सकते हैं, उस मशहूर बात को खींचता है जिसे अक्सर कोट किया जाता है, मैं सोचता हूँ, इसलिए, मैं मौजूद हूँ। और लोगों ने तब से सोचने की जगह कुछ और रखकर इसकी पैरोडी करने की कोशिश की है। मैं महसूस करता हूँ, इसलिए, मैं मौजूद हूँ।

मैंने किसी को जीन-पॉल सार्त्र के नज़रिए से इसकी पैरोडी करते सुना, जिनकी ऑटोबायोग्राफिकल रचना का टाइटल था 'नॉज़िया'। मुझे उल्टी आती है; इसलिए, मैं मौजूद हूँ। और आखिरकार, आप जानते हैं, जैसा कि मैंने पिछली बार कहा था, अगर आप में से किसी को समुद्री बीमारी हुई है, तो आपको अपने होने पर शक नहीं है।

आप चाहेंगे, लेकिन आप नहीं करते। लेकिन, किसी भी हाल में, डेसकार्टेस के लिए, यह है, मुझे लगता है, या मुझे शक है, इसलिए, मैं मौजूद हूँ। कहने का मतलब है, शुरुआती एक्सिओम पहले मेडिटेशन में ही है।

तो, जिन चीज़ों पर शक हो सकता है, उनकी झाड़ियों को हटाने की कोशिश ने ही यह साफ़ बात साबित कर दी थी कि मुझे इस पर शक है। और अगर आपको इस पर शक है, तो ज़ाहिर है, आपको शक है। यह लगभग एक ज़रूरी सच है।

इस पर सवाल उठाना इसे साबित करना है। इसे नकारना नामुमकिन है। इसलिए, यह एक ज़रूरी सच है।

लेकिन, जब वह इस बात पर सोचता है, तो उसे पता चलता है कि शक करना सोचने का ही एक तरीका है। और इसलिए, वह जो कर रहा है वह यह है कि, मैं सोचता हूँ, इसलिए, मैं मौजूद हूँ। तो, *dubito* की जगह, अब यह *cogito, ergo sum* है।

मुझे लगता है, इसलिए, मैं मौजूद हूँ। लेकिन अभी के लिए ज़रूरी बात यह है कि वह कॉगिटो में क्या शामिल करता है। मुझे लगता है कि इस आसान बात में, इसमें शक करना, समझना, कल्पना करना, पुष्टि करना और इनकार करना शामिल है, असल में, किसी भी तरह की सचेत अवस्था और सचेत गतिविधि।

चेतना की एक्टिविटी। अगर आपको ऐसा लगता है, जैसा कि मैं हमेशा ऐसे लोगों से मिलता हूँ जो ऐसा सोचते हैं, कि जब वह कहते हैं, मैं सोचता हूँ, इसलिए, मैं मौजूद हूँ, तो वह कोल्ड इंटेलेक्चुअल एक्टिविटी की बात कर रहे हैं। खैर, आपने अभी ठीक से पढ़ा नहीं है।

क्योंकि वह सचेत भावनाओं, इच्छा के कामों, जैसे मानना और न मानना, को शामिल कर रहा है। इसलिए, वह बुद्धि को भावना से अलग, बुद्धि को इच्छा से अलग नहीं सोच रहा है। यह कहना कि मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ, यह कहने जैसा है कि मैं सचेत हूँ, इसलिए मैं हूँ।

एक और बात, कि जिन चीज़ों को वह सोच में शामिल करते हैं, उनमें चेतना का कंटेंट और चेतना के काम दोनों शामिल हैं। फ़र्क समझें, यह ज़रूरी हो जाता है। चेतना का कंटेंट वह है जिसे वह आम तौर पर एक आइडिया या इमेज कहते हैं।

शायद कोई कॉन्सेप्ट या कोई सोच। यह वही है जो आप सोच रहे हैं। कभी-कभी वह इसे सोच का विषय कहते हैं।

जहां विचार की चीज़ें चेतना में होती हैं। विचार वगैरह। लेकिन, इसमें चेतना के काम भी शामिल हैं।

सोचने का काम। और, ज़ाहिर है, जब आप सोचने के लिए रुकते हैं तो आपको लगता है कि आप सोच रहे हैं। पक्का करने का काम।

इनकार करने का काम। शक करने का काम। चाहने का काम।

उम्मीद करने का काम। ताकि, जब वह कहता है, मैं सोचता हूँ, इसलिए, मैं मौजूद हूँ, तो वह यह नहीं कह रहा है कि मेरे पास आइडिया हैं, और कोई ऐसी चीज़ ज़रूर होगी जिसके पास आइडिया होंगे। या, आइडिया के लिए कोई रिपॉजिटरी ज़रूर होगी।

यानी, मन में। नहीं, वह सिर्फ़ यह नहीं कह रहे हैं। वह कह रहे हैं कि कोई ऐसा एजेंट होना चाहिए जो अलग-अलग सचेत तरीकों से काम करता हो।

सोच का एजेंट। इच्छा रखने वाला एजेंट। उम्मीद रखने वाला एजेंट।

एक एजेंट जो शक करता है। क्योंकि हम सेल्फ-कॉन्शसनेस में जो जानते हैं वह एक्टिविटीज़ के बारे में है। सिर्फ़ कंटेंट के बारे में नहीं।

चेतना की चीज़ें। विचार। और, जैसा कि हम देखेंगे, यह फ़र्क उनके बाद के कुछ आलोचकों के जवाब में बहुत ज़रूरी हो जाता है।

लेकिन मुझे शक है, मुझे लगता है, इस तरह से बताया गया है, यह सब इंट्यूटिव है। कहने का मतलब है, यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसका अंदाज़ा लगाया जा सके, या किसी प्रूफ़ या किसी और स्टेप से इनडायरेक्टली पता चले। उह, यह सीधे सेल्फ़-कॉन्शसनेस में इंट्रोस्पेक्टिव अवेयरनेस से पता चलता है।

किसी भी इंद्रिय बोध या बाहरी चीज़ों की जानकारी से बिल्कुल अलग। अंदर झाँककर, अपने अंदर झाँककर, मुझे इसका एहसास होता है। चाहे मैं बाहरी दुनिया में किसी भी चीज़ के संपर्क में हूँ या नहीं।

यह इंद्रियों से नहीं होता। यह हमारे अपने शरीर की जागरूकता से नहीं होता। ये तो बस मन की जागरूकता है।

देखा ? मेंटल अवेयरनेस। वह साबित नहीं करता, उसे लगता है कि वह साबित नहीं कर सकता, कि उसका शरीर भी है। मेडिटेशन सेक्स तक।

क्योंकि उसके पास उस समय तक किसी भी भौतिक चीज़ के होने को लॉजिकली साबित करने का कोई तरीका नहीं है। उसने वहीं से शुरू किया था, जहाँ से उसने शुरू किया था, पूरे शक के साथ। पूरा शक।

देखा ? तो, वह चेतना की बात कर रहे हैं, भौतिक गुणों, फिजिकल प्रॉपर्टीज़ की नहीं, बल्कि मानसिक गुणों, मेंटल प्रॉपर्टीज़ की। ठीक है। फिजिकल सेंस से इसका कोई लेना-देना नहीं है।

मुझे लगता है, मोम के बारे में उनके उदाहरण का यही मतलब है। और अगर आपकी आँखों में पहचान में चमक नहीं आती, तो इसका मतलब सिर्फ़ इसलिए है क्योंकि आपने इसे पढ़ा नहीं है। लेकिन वह मोम के केक के बारे में बात करते हैं।

गर्म करने पर इसके फिजिकल गुण बदल जाते हैं। हाँ, यह पिघल जाता है। यह नरम हो जाता है।

शायद लिक्विड। इसका रंग बदलता है। इसका आकार बदलता है।

वगैरह-वगैरह। इसलिए फिजिकल प्रॉपर्टीज़ कुछ समय के लिए और रिलेटिव होती हैं। फिर भी, मोम के एक टुकड़े की फिजिकल प्रॉपर्टीज़ के बदलने के बावजूद, मोम का मोम के तौर पर आइडिया एक मेंटल कॉन्सेप्ट है।

आप समझे? ज़रूरी नहीं कि यह न बदलने वाले से जुड़ा हो, ज़रूरी नहीं कि यह बदलते गुणों से जुड़ा हो। आप मोम के उस न बदलने वाले स्वभाव के बारे में सोचें जिसमें बदलते गुण होते हैं। आप समझे? उनका कहना है कि चेतना के ठीक पहले जो है वह भौतिक गुण नहीं हैं, बल्कि उस मामले में मोम का विचार है।

जिसे सिर्फ़ फिजिकल क्वालिटीज़ के कलेक्शन तक कम नहीं किया जा सकता। तो, चेतना के बारे में इस तरह बात करके, वह यह मान रहे हैं कि वह ज्ञान की एक रिप्रेजेंटेशनल थ्योरी के साथ काम करने जा रहे हैं। ताकि, जैसा कि पता चलता है, मन अपने विचारों और अपने मानसिक कामों के बारे में जानता है।

ठीक है? मेंटल आइडिया और काम जो उसे बाहरी शरीर और दूसरी बाहरी सच्चाई दिखाते हैं। ताकि हमारे आइडिया, हमारी मेंटल हालत, किसी चीज़ का रिप्रेजेंटेशन हों। आप समझ रहे हैं? तुरंत रिप्रेजेंटेशन।

हमें इनके बारे में सीधे पता होता है, इंट्यूशन, सीधी जानकारी। हमें इनके बारे में इनडायरेक्ट जानकारी होती है, यानी, इनके होने का अंदाज़ा लगाना पड़ता है। आपको फिजिकल बॉडीज़ के बारे में सीधे पता नहीं होता।

वैसे, आप अपनी चेतना के बाहर किसी भी चीज़ के बारे में सीधे तौर पर नहीं जानते, चाहे वह शरीर हो, दूसरे मन हों, या भगवान हों। आप समझे? हम जिस चीज़ के बारे में सीधे तौर पर जानते हैं, वह हमारी अपनी चेतना है। हाँ।

तो, अगर हम भगवान के होने के बारे में जानना चाहते हैं, तो हमें इसे अपनी चेतना से साबित करना होगा। यानी, यह यह एक पहले से मौजूद सबूत होना चाहिए। ऐसा सबूत जो अनुभव से मिले सबूत पर आधारित न हो, बल्कि किसी की अपनी चेतना के कंटेंट पर आधारित हो।

मेडिटेशन तीन में वह यही करता है। और अगर आप दूसरे मन के होने को साबित करना चाहते हैं, अगर आप दूसरे मन के होने के बारे में जानना चाहते हैं, तो आपको इसे साबित करना होगा। अगर आप शरीर के होने के बारे में जानना चाहते हैं, तो आपको इसे साबित करना होगा।

अब, विलियम टेम्पल, जो इस सदी के पहले हिस्से में ऑक्सफ़ोर्ड के एक फ़िलॉसफ़र थे, कैंटरबरी के आर्कबिशप बने। उनकी एक किताब जिसका नाम नेचर, मैन, एंड गॉड है, उसमें काफ़ी सारी जानकारी दी गई है, और कुछ खास नहीं बताया गया है। लेकिन उनकी एक किताब जिसका नाम नेचर, मैन, एंड गॉड है, में उनका एक चैप्टर है जिसका नाम है डेसकार्टेस की गलतियाँ।

डेसकार्टेस की गलतियाँ। देखिए, गलतियाँ एक गलत कदम होता है, एक गलत कदम। डेसकार्टेस की गलतियाँ ठीक यही थीं।

यह दावा कि हम जिस चीज़ के बारे में सीधे तौर पर जानते हैं, वह हमारी अपनी चेतना का कंटेंट है। क्योंकि इसी ने उस पूरी समस्या को सामने रखा जिसे मॉडर्न फिलॉसफी को दूर करना था। और हम तब से डेसकार्टेस की समस्या को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं।

हाँ, मॉडर्न एपिस्टेमोलॉजी का इतिहास यहीं से शुरू होता है। यहाँ से इस मायने में शुरू होता है कि डेसकार्टेस हमसे कह रहे हैं, आपको यह साबित करना होगा कि आपके पास एक शरीर है, कि एक बाहरी दुनिया है। आपको यह साबित करना होगा कि दूसरे दिमाग भी मौजूद हैं।

आपको भगवान के होने को साबित करना होगा। हमारे पास अंदाज़े के अलावा इसे जानने का कोई और तरीका नहीं है। हाँ।

और यह मुश्किल हो जाता है। ओह, मेरा मतलब है, हम भगवान के होने पर बहस करने की कोशिशों से काफ़ी वाकिफ़ हैं। हमारी ईसाई परंपरा में, हम इसके बारे में जानते हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं कि हमें उस खास तरह के काम के बारे में पता हो जो इसे डेसकार्टेस के शुरुआती पॉइंट से मिला है।

लेकिन दूसरे मन के होने को साबित करने के बारे में क्या? क्या आपको कभी चिंता हुई कि क्या सच में मेरे पास कोई मन है? समझे ? लेकिन हे, आप यह कैसे करेंगे? आप यह कैसे करेंगे? आपके पास कोई ऐसी टेलीपैथी नहीं है जो मेरी चेतना के बारे में तुरंत जानकारी दे। समझे ? तो डेसकार्टेस के लिए यह पता चलता है कि आप दूसरे मन के होने को तब तक साबित नहीं कर सकते जब तक आप दूसरे शरीर के होने को साबित नहीं कर देते। और फिर, आपके शारीरिक व्यवहार और मेरे शारीरिक व्यवहार के बीच समानताओं के कारण, और आपके शारीरिक व्यवहार और आपके मन के बीच के आपसी संबंध को जानने के कारण, आप एक एनालॉजिकल तर्क से, एनालॉजी के ज़रिए तर्क देते हुए, यह अनुमान लगा पाते हैं कि मेरे शरीर और मेरे मन के बीच एक एनालॉजिकल संबंध होना चाहिए, जो आपके शरीर और आपके मन के बीच है।

और क्योंकि आप अपने मामले में यह जानते हैं, तो आप मेरे मामले में भी इसका अंदाज़ा लगा सकते हैं। समझे ? लेकिन उस एनालॉजिकल अंदाज़े के अलावा, आपके पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि मेरे पास दिमाग है। डेसकार्टेस के अनुसार।

खैर, यह थोड़ा अजीब लगता है। समझे ? लेकिन इसका मतलब यह है कि, उह, आपके पास ज्ञान की इस रिप्रेजेंटेशनल थ्योरी के लिए एक अल्टरनेटिव एपिस्टेमोलॉजी होनी चाहिए। अगर आप, मान लीजिए, दूसरे दिमागों को जानने के हमारे पास दूसरे तरीके हैं।

क्या दूसरे मन, दूसरी चेतनाओं के बारे में कोई सीधी जानकारी है? कुछ और ज्यादा सीधी। और जब हम हेगेल के पास पहुँचते हैं, तो हम पाते हैं कि वह कहते हैं कि है। आप समझे? और, अस्तित्ववादी परंपरा में, हाँ, है।

लेकिन प्रॉब्लम यहीं से शुरू होती है। ठीक है, अब तक मैं जिस बारे में बात कर रहा था, वह बस यही है। कोगिटो।

अब, इससे यह पता चलता है कि मैं मौजूद हूँ। इसलिए, मैं मौजूद हूँ। लेकिन, सवाल यह है कि मैं क्या हूँ जो मौजूद है? और शुरू में, डेसकार्टेस यह नहीं बताते कि यह कितना प्रॉब्लम वाला है।

क्योंकि अगर आर्गुमेंट यह है कि, मैं सोचता हूँ, इसलिए, मैं मौजूद हूँ, तो उन समयों के दौरान क्या होता है जब मैं नहीं सोचता, जब मैं बेहोश होता हूँ, गहरी नींद में, बिना सपनों की नींद में? आप समझे? अब, इससे यह साबित नहीं होता कि मैं मौजूद नहीं हूँ। बात यह है कि, मैं यह साबित नहीं कर सकता कि मैं मौजूद था। आप समझे? दूसरे शब्दों में, उह, जिसे हम एक शुरुआती पॉइंट के तौर पर कमिटेड लगते हैं, उसे, उह, चेतना के वर्तमान पल का सोलिप्सिज़्म कहा जा सकता है।

अब, सोलिप्सिज़्म एक ऐसा नज़रिया है जिसे कोई भी गंभीरता से नहीं लेता। यह एक तरह से बंद गली है। बोरी खींच ली।

असल में, एक सोलिप्सिस्ट वह होता है जो कहता है, मैं और सिर्फ मैं ही मौजूद हूँ। सोलस इप्सा, सिर्फ खुद। अभी के समय का सोलिप्सिज़्म यह सोच होगी कि मैं और सिर्फ मैं ही इस समय मौजूद हूँ।

सोलिप्सिज़्म को देख सकते हैं जो हाइपोथेटिकल शुरुआती पॉइंट है। मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं मौजूद हूँ। किसी और के बारे में नहीं जानता, किसी और दिमाग के बारे में नहीं, शरीर की तो बात ही छोड़िए।

आप समझे? लेकिन अभी का पल क्यों? मेरी चेतना के रुक-रुक कर चलने की समस्या के कारण। मेरी चेतना में गैप है। और सच कहूँ तो, रात में गैप जितना लंबा होता है, अगले दिन मैं उतना ही खुश रहता हूँ।

देखा ? गैपी कॉन्शसनेस। हाँ। लेकिन, मुझे कैसे पता चलेगा कि मेरी कॉन्शसनेस गैपी है या नहीं ? मुझे कैसे पता चलेगा कि पिछली कॉन्शसनेस मेरी हैं? लेकिन सिर्फ याददाश्त से।

मेमोरी क्या है? यह प्रेजेंट कॉन्शसनेस है, पास्ट कॉन्शसनेस नहीं। मेरी प्रेजेंट कॉन्शसनेस में, मेरे पास एक रिप्रेजेंटेशन है जिसे मैं पास्ट कॉन्शसनेस मानता हूँ। लेकिन मुझे कभी भी पास्ट कॉन्शसनेस का डायरेक्ट अवेयरनेस नहीं होता।

क्योंकि मैं पास्ट में नहीं हूँ, मैं प्रेजेंट में हूँ। इसलिए मुझे बस अपनी प्रेजेंट कॉन्शसनेस पता है। कॉन्शसनेस का प्रेजेंट मोमेंट, मुझे यह भी नहीं पता कि मैंने ऐसा कहा था।

वर्तमान क्षण का सोलिप्सिज़्म। वर्तमान क्षण के सोलिप्सिज़्म की ओर ले जाने वाली दो समस्याएं। तीन समस्याएं।

एक, मुझे बस इतना पता है कि मैं मौजूद हूँ। नंबर एक। नंबर दो, मेरी अपनी चेतना का रुक जाना।

नंबर तीन, याददाश्त की समस्या। याददाश्त की समस्या। क्योंकि याददाश्त क्या है, लेकिन पिछली चेतना का मौजूदा रूप? तो आप जॉन लॉक और डेविड ह्यूम जैसे लोगों को इस बात पर बहस करते हुए पाते हैं कि वे जिसे पर्सनल आइडेंटिटी कहते हैं, उसे क्या कहते हैं।

अतीत से लेकर वर्तमान और भविष्य तक एक ही पहचान बनी रहना। आप समझ रहे हैं? पर्सनल पहचान। याददाश्त के भरोसे के बारे में बहस करने की कोशिश करना।

और असल में, डेविड ह्यूम हाथ ऊपर उठाकर कहते हैं, मुझे नहीं पता, इस पर। क्योंकि आप मुश्किल से ही अतीत के आने का इंतज़ार कर सकते हैं, आप भविष्य के साथ यह देखने के लिए इंतज़ार कर सकते हैं कि क्या ऐसा हुआ था। आप पीछे, अतीत में आगे नहीं जा सकते।

तो, जो प्रॉब्लम वह खड़ी कर रहे हैं, वह सच में बहुत इंटेंस है। कॉन्शसनेस के प्रेजेंट मोमेंट का सोलिप्सिज़्म। खैर, इससे पता चलता है कि उन्हें किस तरह के ऑब्जेक्शन का सामना करना पड़ेगा।

लेकिन, बात यह है कि जिस इंट्यूशन से वह शुरू में बर्ताव कर रहा है, डुबिटो, कोगिटो, उसमें सारी प्रॉब्लम शामिल है। लेकिन उसे एर्गो सम भी एक तरह से, आसानी से समझ में आने वाला नतीजा लगता है। आप देखिए, इंग्लिश में यह दो शब्द हैं, मुझे लगता है।

जिस लैटिन में उन्होंने लिखा या जिस फ्रेंच में उन्होंने लिखा, लैटिन में यह एक शब्द है। कोगिटो। फ्रेंच में यह दो होंगे।

आप देखिए, लेकिन एक शब्द। तो क्या, यह मैं क्या है जो सोचने में शामिल है, कोगिटो, एक शब्द? खैर, वह इसे एक बहुत साफ़ बात मानता है, कि यह, जो मैं हूँ, एक सोचने वाली चीज़ है। यानी, एक सोचने वाला एजेंट।

एक चीज़ जो सोचती है। उसका वाक्यांश, रेस कॉगिटान्स। कॉगिटान्स, प्रेजेंट पार्टिसिपल, जो बताता है कि क्या हो रहा है।

रेस, चीज़, पदार्थ, एंटिटी। रेस कॉगिटान्स। लेकिन वहाँ वह एक ऐसे नतीजे पर पहुँच गया है जो शायद सही नहीं है।

क्योंकि सोचने के काम में खुद के बारे में तुरंत पता चलने पर, सोच-समझकर, हम खुद को सोचते हुए जानते हैं। इसमें दौड़ कहाँ से आती है? वह चीज़। क्या मुझे उस मन के बारे में पता है जो सोचता है? मन एक मेंटल चीज़ है, एक बिना चीज़ वाली चीज़ है, एक आत्मा है।

देखा ? फिर भी वह यहाँ यही बात कह रहा है। मैं एक सोचने वाली चीज़ हूँ। और वह मानता है कि उसने आत्मा के होने को साबित कर दिया है।

असल में, काम की शुरुआत में ही, वह कहते हैं कि वह भगवान और आत्मा के होने को साबित करने जा रहे हैं। जो ठीक वही था जो स्कॉलैस्टिक्स ने करने की कोशिश की थी। थियोलॉजी के लिए एक बेस देना।

खैर, उन्होंने दिखाया है कि हमें सोच और विचारों का सीधा अवेयरनेस है। थोड़ा सोचने वाला। समझे ? यही सवाल है।

और इसी बात पर सवाल उठता है क्योंकि जब वह इस सोचने वाली चीज़ की तुलना आत्मा, अंदरूनी हिस्से, बिना किसी चीज़ के दिमाग से करते हैं, तो थॉमस हॉब्स, जिनके पास उन्होंने पब्लिश होने से पहले कमेंट्स के लिए मेडिटेशन भेजे थे। थॉमस हॉब्स ने अपनी साफ़ आपत्ति उठाई। सोचने वाली चीज़ एक शरीर क्यों नहीं होनी चाहिए? जो, ज़ाहिर है, ठीक वैसा ही है जैसा थॉमस हॉब्स ने सोचा था।

आपको थॉमस हॉब्स का मैटेरियलिज़्म याद है। सोचने वाली चीज़ शरीर क्यों नहीं होनी चाहिए? बेशक, वह यह मान रहे हैं कि सोचने का काम दिमाग करता है, न कि कोई बिना चीज़ वाली आत्मा। कोई शरीर वाला सोचने वाला क्यों नहीं? इस पर डेसकार्टेस का जवाब है।

पहली बात, मुझे शरीर के बारे में कोई सहज जानकारी नहीं है, जैसा कि मुझे मन के बारे में है। कहने का मतलब है, मुझे एजेंट के बारे में सहज जानकारी है, लेकिन मुझे शरीर के बारे में सहज जानकारी नहीं है। और दूसरी बात, उनका दावा है कि मुझे आत्मा के बारे में कुछ पता है।

अब, यह शब्द 'नोशन' एक मुश्किल शब्द है। वह यह नहीं कह रहा है कि मेरे पास कोई साफ़ और अलग आइडिया है। अब, मेरे पास सोचने, शक करने और कई आइडिया के बारे में साफ़ और अलग आइडिया है, लेकिन मेरे पास मन के सब्सटेंस, आत्मा के सब्सटेंस के बारे में साफ़ और अलग आइडिया नहीं है।

मुझे इस बारे में थोड़ा धुंधला सा अंदाज़ा है कि वह क्या होगा। वह अस्पष्ट नहीं कहता, लेकिन यह एक अंदाज़ा है; यह कोई साफ़ और अलग आइडिया नहीं है। अंदाज़ा का मतलब है कि शायद साफ़ से ज़्यादा कल्पनाशील कुछ हो।

लेकिन किसी भी हाल में, उन्हें लगता है कि इस सोच की वजह से आत्मा को सोचने वाला मानने के ज़्यादा कारण हैं, बजाय इसके कि यह मानने के कि मैटर ही आत्मा है, कि शरीर सोचने वाला है। तो, मैं सोचता हूँ, इसलिए मेरा वजूद है। मैं क्या हूँ? एक सोचने वाली चीज़, एक आत्मा।

वगैरह। खैर, आगे चलकर, एक और आपत्ति होगी जिसका हम सामना करेंगे, जिसे डेविड ह्यूम ने 1800 के आसपास उठाया था, जिन्होंने मन और मन के बारे में हमारी आत्मनिरीक्षण वाली जागरूकता के बारे में कहा था, नहीं, हम सिर्फ़ अपने विचारों के बारे में जानते हैं। और अपने मन के बारे में जागरूक होने पर, मैं सिर्फ़ विचारों के एक बंडल के बारे में जानता हूँ जिसे मैं अपना कहता हूँ।

लेकिन उन्हें क्या जोड़ता है ? मैं, आप समझ रहे हैं। अब, ह्यूम मेंटल कामों की अवेयरनेस की बात नहीं कर रहे हैं, सिर्फ़ आइडियाज़ की। और इसलिए, मुझे लगता है कि डेसकार्टेस की बात इस बात पर टिकी है कि हमें अपने मेंटल कामों की सीधी अवेयरनेस होती है, इसलिए, एक एजेंट की।

और कभी-कभी किसी बात को मानने, मना करने, फैसला करने, सोचने, तर्क करने, अंदाज़ा लगाने में दिमागी कोशिश लगती है। आप देखिए, हम उन मामलों में काम करने वाली एजेंसी के बारे में जानते हैं। इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि डेसकार्टेस का तर्क सिर्फ़ रिप्रेजेंटेशनल आइडिया पर ही नहीं, बल्कि हमारी अपनी मेंटल एक्टिविटी की एक इंट्रोस्पेक्टिव चेतना पर टिका है, जो मुझे लगता है कि आपको डेविड ह्यूम में नहीं मिलेगी।

बस आइडिया हैं। तो, मेंटल एक्टिविटी के बिना, एजेंट क्यों हो ? समझे ? और इसलिए, जब एजेंसी के बारे में बिना किसी अवेयरनेस के मन के होने की बात आती है, तो ह्यूम बस एक स्केप्टिक हैं। हमारे पास जानने का कोई तरीका नहीं है।

खैर, यह पता चलेगा कि ह्यूम भौतिक चीज़ों के होने को लेकर भी संदेहवादी हैं। वह भगवान के होने को साबित करने को लेकर भी संदेहवादी हैं। तो, डेसकार्टेस, जिन्होंने संदेहवाद से शुरुआत की थी, असल में, डेविड ह्यूम के अनुसार, वहीं खत्म होना चाहिए जहाँ से उन्होंने शुरुआत की थी, संदेहवाद।

आप समझे? तो, डेसकार्टेस से ह्यूम तक एपिस्टेमोलॉजी की कहानी, स्केप्टिसिज़्म से बाहर निकलने के लिए एक ठोस कोशिश की कहानी है, जिसे हमने पिछली बार फाउंडेशनलिस्ट अप्रोच कहा था। ठीक है। एक अप्रोच जो, डेविड ह्यूम के अनुसार, पूरी तरह से फेल हो जाता है।

तो, ह्यूम को शक से बाहर निकलने का कोई दूसरा रास्ता खोजना होगा। और उनके लिए, यह उन विश्वासों का मामला है जो दिमागी आदतों का नतीजा हैं। एक तरह का प्रैग्मैटिज़्म।

ठीक है। रूथ? डेसकार्टेस ने खुद को इस बात में बांध लिया है कि वह दिमागी काम के इंट्यूशन को जिस तरह से बताते हैं, वह उससे अलग है, जैसे मैं कहूँगा, एक ज़्यादा रियलिस्ट नज़रिए से, मेरे शरीर में इंट्यूशन है। आप जानते हैं, रियलिस्ट आकर कहेगा, नहीं, सच में, मेरे शरीर में इंट्यूशन है।

यह बस वैसा ही है जैसा मैं इसे जानता हूँ। बात का निचोड़ रिप्रेजेंटेशनल बिज़नेस है। और मुझे लगता है कि मैंने उस शब्द को कहीं बीच में मिटा दिया।

हाँ, आप देखिए, इंट्यूटिव वह चीज़ है जो डायरेक्ट होती है। रिप्रेजेंटेशन का मतलब है कि हमारा ज्ञान इनडायरेक्ट है। और जिस तरह के रियलिज़्म के बारे में मुझे लगता है कि आप बात कर रहे हैं, जिस तरह के रियलिज़्म के बारे में डलास विलार्ड पिछले हफ़्ते, परसों से पहले बात कर रहे थे, वह डायरेक्ट रियलिज़्म है।

उन्होंने स्कॉटिश रियलिज़्म का ज़िक्र किया। थॉमस रीड का। उन्होंने जीई मूर का ज़िक्र किया।

यह एक डायरेक्ट रियलिज़्म है। हेगेल दूसरे मन की सीधी जानकारी की बात कैसे कर सकते हैं, लेकिन उसके बारे में डायरेक्ट रियलिज़्म की वजह से? इसी तरह, एग्ज़िस्टेंशियलिस्ट। इस तरह कोई चीज़ हाइपोथेटिकली कह सकती है, मुझे उल्टी होती है, इसलिए मैं मौजूद हूँ।

देखिए, क्योंकि मतली की हालत में अपने शरीर के होने का सीधा एहसास होता है। समझे ? तो आप सही हैं। बात डायरेक्ट या इनडायरेक्ट है।

डायरेक्ट या रिप्रेजेंटेटिव नॉलेज। नहीं, सिमेंटिक्स नहीं। हाँ, मुझे लगता है कि यह दो अलग-अलग डिस्क्रिप्शन के काफ़ी होने पर निर्भर करता है।

जानने का, जागरूक होने का, समझने का। और आप में से जो लोग डलास विलार्ड के दूसरे लेक्चर में थे, उन्हें याद होगा कि उन्होंने उस रियलिज़्म के लिए कई बातों की बात की थी। उनमें से एक थी इंटेंशनैलिटी की सोच।

कहने का मतलब है, मन बाहर पहुँचता है और सीधे समझ लेता है कि बाहर क्या है। यह दिमागी इरादे की ओर इशारा करता है। दूसरा था एक ठोस खुद का महत्व।

कहने का मतलब है, एक एजेंट जिसका ऐसा इरादा और मेंटल आउटरीच हो। तो, ठीक उसी टारगेट पर, हाँ। हाँ, और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम इस तरह की चीज़ों में शामिल होते जाएँगे।

लेकिन यह डेसकार्टेस ही थे जिन्होंने 17वीं और 18वीं सदी की एपिस्टेमोलॉजी को असल में अहम मुद्दा बनाया। बहुत अहम। और कुछ? डेविड? हाँ, इसमें कुछ लॉजिकल कमियाँ हो सकती हैं।

जैसे, तर्क की चेन में कोई गैप। कोई दबा हुआ आधार जो सच नहीं होता। देखिए, कुछ ऐसा ही।

लेकिन इस रिप्रेजेंटेशनल नज़रिए में यही गलती है। जब वह कहते हैं कि जिस चीज़ के बारे में हम जानते हैं, वह हमारी अपनी मेंटल स्टेट है। आप देखिए, अब, मैं इसे चेतना के नेचर का गलत डिस्क्रिप्शन मानता हूँ।

एक गलत जानकारी। हाँ, क्योंकि अगर, जैसा कि रूथ कहती हैं, मुझे अपने शरीर का पता है, या जैसा कि सार्त्र कहते हैं, मुझे अपने शरीर की उल्टी का पता है। आप देखिए, एक तुरंत तरीका।

अगर ऐसा है, तो मुझे अपने आइडिया के बारे में सिर्फ़ एक गलत जानकारी के तौर पर पता है। देखिए, उल्टी का आइडिया होने और उल्टी होने में बहुत फ़र्क होता है। है ना? आपको अभी आइडिया आ गया है।

मुझे ऐसा करते हुए कोई नहीं दिखता। आप देखिए। और अपने तर्क में, आपने पहले कहा था कि गलती कोई गलती नहीं है, लेकिन ह्यूम असल में जिस बात की ओर इशारा करते हैं, वह है लोगों के आपस में बातचीत करने का तरीका।

हाँ, हाँ। देखिए, यह कहना सही हो सकता है कि मैं सोचता हूँ, इसलिए मेरा वजूद है। हॉब्स कहते हैं कि यह मानना गलत है कि आप एक सोचने वाली चीज़ हैं, एक बेमतलब आत्मा हैं।

यह बात सही नहीं है। ह्यूम कहते हैं कि यह मानना गलत है कि कोई चीज़ है भी। कि चीज़ें ...

तो उन्हें लगता है कि इस तर्क में कुछ कमियाँ हैं, हाँ। जेनेल। आप कैसे समझाएंगी कि आप कैसे इस बात से आगे बढ़ती हैं कि, मैं मौजूद हूँ, मैं एक चीज़ हूँ? ठीक है, यह अगला सवाल है।

जिम? तुम थोड़ा कम ग्राफिकली सोच रहे हो। क्या तुम कहोगे कि मुझे बस आइडिया आ गया? हाँ, यह बात फिर से तब सामने आती है जब हम जॉर्ज बर्कले के पास पहुँचते हैं, जिनके सब्जेक्टिव आइडियलिज़्म के बेसिस पर इसी तरह का रिप्रेजेंटेशनल व्यू है, आप देखिए। लेकिन जॉर्ज बर्कले भूख के आइडिया और भूख लगने के बीच फ़र्क करेंगे।

उनका उदाहरण दर्द का है। मुझे लगता है कि यह 18वीं सदी के दूसरे अंग्रेज़ों में से एक था। ओह, अभी के लिए उनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा।

किसने कहा कि वह विद्वान बिशप बर्कले का खंडन करेगा, और उसने एक पत्थर पर लात मारी। ओह, इससे दर्द होता है। यह असली दर्द है, सिर्फ़ दर्द का विचार नहीं।

इस पर बर्कले ने जवाब दिया, हाँ, दर्द का विचार अपनी मर्ज़ी से होता है। असली दर्द बिना मर्ज़ी का होता है। यही असली फ़र्क है।

लेकिन ये दोनों ही आइडिया हैं। कुछ आइडिया तो बिना मर्ज़ी के होते हैं, आप देखिए। तो, मुझे लगता है कि डेसकार्टेस भी यही बात कहेंगे।

कि उल्टी करने का आपका अभी का विचार—या खाने का आपका अभी का विचार अपनी मर्ज़ी से है, जबकि भूख लगना बिना मर्ज़ी का है। लेकिन ये दोनों ही विचार हैं। लेकिन इससे मुझे पता नहीं चलता—कोई सीधी जानकारी नहीं।

नहीं। डेसकार्टेस और बर्कले के अनुसार नहीं। रीड के अनुसार, हाँ।

टिम? अच्छा, क्या कोई वजह है कि डेसकार्टेस के साथ सावधानी से बहस करने वाला एक बिना चीज़ का एजेंट थकता नहीं है? मेरा मतलब है, एक फिजिकल थकान होती है, हाँ, लेकिन एक मेंटल थकान भी होती है, है ना? पूरी तरह से मेंटल, थकान। अब, डेसकार्टेस इसका जवाब इस तरह नहीं देंगे। बर्कले इसका जवाब इस तरह देंगे।

डेसकार्टेस इसका जवाब शायद यह कहकर देंगे, हाँ, जैसा कि हम देखेंगे जब हम शरीर के होने को साबित कर देंगे, तो शरीर और मन के बीच एक कॉज़ल रिलेशनशिप होता है। इसलिए अगर आपका शरीर थक जाता है, तो आपके मन पर भी असर पड़ता है। हम्म-हम्म।

हाँ, यह मज़ेदार है कि रात के करीब नौ या दस बजे मेरा दिमाग धुंधला हो जाता है। आमतौर पर, सुबह यह धुंधला नहीं होता, लेकिन रात में धुंधला हो जाता है। क्यों? खैर, डेसकार्टेस कहेंगे कि यह साफ़ है।

आपका शरीर थक रहा है, और आपके दिमाग पर असर पड़ रहा है। हाँ। हाँ।

ध्यान रखें कि आप सब्सटेंस का मतलब किसी फिजिकल चीज़ से न लें। तो, यह रेस शब्द का हमारा ट्रांसलेशन है, जिसका मतलब है एक चीज़, और हम सब्सटेंस शब्द का इस्तेमाल आम इंग्लिश में कई तरह से करते हैं। अब, इस आर्गुमेंट का सब्सटेंस यह है, आप देखिए, या हम कहते हैं, क्या बात है? मतलब, प्रॉब्लम क्या है? खैर, चर्चा का विषय यह है, आप देखिए, तो मैटर और सब्सटेंस जैसे शब्द ज़रूरी नहीं कि फिजिकल चीज़ों को ही रेफर करें।

असल में, सब्सटेंस वह है जो नीचे खड़ा है। सब-स्टा-ओ। कितने लोगों ने हाई स्कूल लैटिन पढ़ा था? जंगली लोगों का झुंड।

सब-स्टा-ओ, नीचे खड़ा है, आप देखिए। नहीं, ज़रूर, आप जानते हैं, ग्रीक, रोमन, या बर्बर ही एकमात्र विकल्प हैं। कम से कम पुराने ज़माने में तो ऐसा ही था।

तो, इस मायने में, आप देखिए, मन ही वह चीज़ है जो सभी सचेत अवस्थाओं और गतिविधियों के पीछे है। मन की असलियत। डेविड? मैं सोच रहा था, डेसकार्टेस के साथ, अगर वह कहते हैं कि बिना मर्ज़ी के विचार होते हैं, तो क्या वह यह कहकर कि हमारे अंदर ये बिना मर्ज़ी के विचार चल रहे हैं, अभी के अकेलेपन से बच सकते हैं? नहीं, मुझे लगता है कि जिस विचार के बारे में आप सचेत नहीं हैं, उसे वह खुद में विरोधाभास मानेंगे।

यह एक चौकोर गोले जैसा है। क्योंकि एक विचार एक सचेत अवस्था है, और आप एक अचेतन चेतना के बारे में पूछ रहे हैं। ऐसे कोई जानवर नहीं हैं।

खैर, मेंटल स्टेट होती हैं। सपने देखते समय आपके दिमाग में इमेज आती हैं। तो सपने देखना चेतना की एक स्टेट है।

यह जागी हुई चेतना नहीं है, बल्कि यह एक सचेत अवस्था है। आप मुझे कभी-कभी बता सकते हैं कि आप क्या सपना देखते हैं। क्या सबकॉन्शियस में ऐसे विचार नहीं होते जिनके बारे में आपको पता नहीं होता? क्या आपका मतलब है कि आपकी सचेत अवस्थाओं पर कुछ अनजाने या आधे-अधूरे असर होते हैं? क्या यह तब तक एक विचार है जब तक यह सचेत न हो जाए? अब, उस चेतना के कारण दूसरी बात है।

लेकिन डेपथ साइकोलॉजी ने ऐसे कई कारण खोजे हैं जिनके बारे में पहले किसी ने नहीं सोचा था। मिले? खैर, हाइपोथीसाइज़ किया। हाँ।

कारण बताना। ठीक है, तीसरा ध्यान। जेनेल उस पर आना चाहती है।

ध्यान तीन। बस इतनी दूर आने के बाद, कि मैं एक सोचने वाली चीज़ हूँ, सोचने वाले विचार हूँ, यह बहुत साफ़ है कि डेसकार्टेस के पास अब जो कुछ भी वह साबित करना चाहते हैं, उसके लिए सिर्फ़ दो और आधार हैं। एक, मन का होना, ठीक है, और दो, मेरे पास जो असली विचार हैं।

तो अगर वह भगवान के होने के लिए बहस करना चाहता है, तो उसे इनमें से किसी एक या दोनों से बहस करनी होगी। और वह करता भी है। मेडिटेशन तीन का मुख्य हिस्सा हमारे असली विचारों से बहस करना है।

खास तौर पर, भगवान के बारे में मेरा विचार, जो मेरे विचारों में से एक है, आप देखिए। लेकिन दूसरा होगा मन का होना। हाँ।

और दोनों ही मामलों में, वह एक कॉज़ल आर्गुमेंट बनाने की कोशिश करेगा। एक कॉज़ल आर्गुमेंट। अब, मन के होने का आर्गुमेंट काफ़ी आसान है, और यह सिर्फ़ एक सेकेंडरी रोल निभाता है।

यह भगवान के विचार से तर्क में बुनी गई एक दूसरी भूमिका है। लेकिन मन का होना काफ़ी आसान है। यहाँ मैं, बहुत साफ़ तौर पर, एक सीमित, गलती करने वाली, अचानक आने वाली चीज़ हूँ।

लिमिटेड, गलती के अधीन, और मेरे मन के तौर पर दूसरी चीज़ों पर निर्भर, और मेरे मन के तौर पर काम करने के लिए दूसरी चीज़ों पर निर्भर। दूसरे शब्दों में, वह मन के होने में जिस चीज़ से निपट रहा है, वह वह एजेंट है जो होश में काम करता है, एजेंट, और विचार। आप देखिए, ये चीज़ें उसे अपनी सोच के शुरुआती विवरण से मिलती हैं।

आइडिया होते हैं, एक एजेंट होता है, एक सोचने वाली चीज़ होती है। तो उसका सवाल यह होगा कि इनकी वजह क्या है? यह सबसे बड़ा कारण है। तो यह कॉज़-इफ़ेक्ट आर्गुमेंट है।

अब, अगर आप पूरी तरह तैयार हैं, तो मुझे पता है कि आप फिजिकली नहीं, बल्कि मेंटली पूरी तरह तैयार हैं। हो सकता है आप फिजिकली पूरी तरह तैयार हों; यह लगभग वही समय है। लेकिन अगर आप मेंटली पूरी तरह तैयार हैं, तो आप पहचान लेंगे कि कॉज़ल आर्गुमेंट पर आते हुए, उसके पास एक दबा हुआ आधार भी है।

यानी, असल में, कारण और कारण संबंध होते हैं। किसी भी अचानक होने वाली चीज़ का कोई कारण होना चाहिए। विचार खुद से मौजूद नहीं होते; उनका कोई कारण होना चाहिए।

कंटिजेंट माइंड्स खुद से मौजूद नहीं होते; उनका कोई कारण ज़रूर होगा। आउच! यह कहाँ से आया? खैर, मुझे लगता है कि यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि जब आप सब कुछ रोकने की कोशिश करते हैं, तो आपको आगे चलकर कुछ ऐसा ज़रूर मिलेगा जिसे आप रोकने में नाकाम रहेंगे। वह मेडिटेशन वन में हर चीज़ पर फ़ैसले को रोक रहा है।

लेकिन साफ़ तौर पर, उन्होंने कॉज़ल प्रिंसिपल पर फ़ैसला टाला नहीं। ओह, हो सकता है, आप जानते हैं, वे इसके लिए एक तर्क दे सकते हैं, यह कहते हुए कि प्रकृति हमें यह सिखाती है। और सच में, आपने देखा होगा कि वे तीन तरह के विचारों में फ़र्क करते हैं।

ऐसे आइडिया जो पैदाइशी होते हैं, ऐसे आइडिया जो अचानक आते हैं, और ऐसे आइडिया जो बनावटी होते हैं। बनावटी आइडिया वो होता है जो मैं बनाता हूँ; यह एक कल्पना है। जैसे मेरा आइडिया एक प्यारे जिराफ़ का है जिसके तितली के पंख हैं और पूंछ पर गुलाबी पोल्का डॉट्स हैं।

देखिए, यह एक मनगढ़ंत आइडिया है। कुछ आइडिया ऐसे होते हैं जो अचानक आते हैं। यानी, वे हमारे पास बाहरी एजेंट से, बाहरी वजहों से आते हैं।

जैसे मेरा आइडिया कि कैंपस में एक पेड़ है, यह अचानक हुआ है। क्योंकि यह सेंस ऑर्गन्स वगैरह पर असर डाल रहा है। लेकिन फिर यह जन्मजात आइडियाज़ की संभावना है।

आप देखिए, अब हमारे अचानक आने वाले विचारों का अनुभव, जिन पर हमारा कोई कंट्रोल नहीं होता, अपनी मर्ज़ी से नहीं, बल्कि अपनी मर्ज़ी से होता है। आप देखिए, अचानक आने वाले विचार अपनी मर्ज़ी से होते हैं, और मनगढ़ंत विचार अपनी मर्ज़ी से होते हैं। इन अचानक आने वाले, अपनी मर्ज़ी से आने वाले विचारों का होना ही ऐसा है कि, जैसा कि वह कहते हैं, प्रकृति हमें यह सिखाती है।

कुदरत यह साफ़ कर देती है कि कोई वजह ज़रूर है। मेरा इस बात पर कोई कंट्रोल नहीं है। आप देखिए, मैं यहाँ कार्ल की तरफ़ देख रहा हूँ, और मैं बच नहीं सकता।

ये रहा। पसंद करो या छोड़ दो, मेरा मतलब है, ये रहा। बिना मर्ज़ी के।

तो वह कह सकता है कि कॉज़ल आइडिया आइडिया होने के अनुभव में ही दिया गया है। कॉज़ल प्रिंसिपल उसमें दिया गया है। लेकिन किसी भी मामले में, यह साफ़ तौर पर शामिल है।

अब, डेसकार्टेस का यह काम कि वह कॉज़ल प्रिंसिपल जैसी चीज़ों को हल्के में ले लेते हैं, अजीब है, क्योंकि उनका दावा है कि उन्होंने पिछले सभी फिलॉसॉफिकल नतीजों पर कोई फैसला नहीं लिया है। आपने गिलसन का एक लेख पढ़ा है, है ना, जब हम ऑगस्टीन के बारे में बात कर रहे थे? खैर, गिलसन की डेसकार्टेस पर एक किताब है जिसका नाम है 'द इन्फ्लुएंस ऑफ़ मीडिवल फिलॉसफी ऑन रेने डेसकार्टेस'। यह एक किताब है, वाह, मोटी।

डेसकार्टेस, जिन्होंने सभी मध्ययुगीन दार्शनिक नतीजों को रोकने का नाटक किया, और गिलसन ने रेने डेसकार्टेस पर मध्ययुगीन दर्शन के असर पर एक किताब लिखी, वाह, मोटी। हाँ, आप बिना किसी पहले से सोचे-समझे सोचने की कोशिश करें, और आप उसी जगह पहुँच जाएँगे, आप देखिए। कोई भी बिना किसी पहले से सोचे-समझे विज्ञान एक विल-ओ-द-विस्प है।

यह डेसकार्टेस के लिए था। हम हमेशा अपनी पहले से बनी सोच के बारे में नहीं जानते। यही समस्या है।

ये आपके अनकॉन्शियस आइडिया हैं। बात यह है कि अगर वे अनकॉन्शियस हैं, तो वे आपके नहीं हैं। वे आपके पास नहीं हैं।

वे तुम्हें पा चुके हैं। खैर, समय धीरे-धीरे निकल गया है।